* विश्व कल्याण भावना *

ये विश्वमें सुख और शांति हो
ऐसी करुणा कर देना

दील भीतर के सब तिमिर हरो
तरणतारण परमात्मा

ज्ञानांजन हे प्रगट पुरुष
सिद्धेश्वर शिल्पी सन्मुख

सब जीव को आतम प्राप्ति द्यो
निरावरणी व्यक्तात्मा .... ये विश्वमें

एक स्वभाव है प्रकाशका
चाहे किसी भी दीपमें हों

पछछम पूरब सूरज हो
निष्पक्षी है किराणात्मा .... ये विश्वमें

निःसंशय ॐ महेश्वरा
प्रफुल्लित स्वानंद उदयकरा

शुद्ध अंतःस्तल की झगमग ज्योत
केवल ग्यानमें स्थिर करना .... ये विश्वमें

भव-भय भंजक मूल शरण
आप से कटतें जनम मरण

जब आयु अंतिम आ जायें
त्वं सुचरणोमें ले लेना .... ये विश्वमें

-कविराज नवनीत संघवी